



जन संपादकीय

**चुनाव आते ही मायावती
व अधिकलेश में 30 साल
पुराने नारों पर राडा उभरा**

देश में या किसी राज्य में चुनाव हों और वहां नेताओं की जुबान से अपने विरोधियों के खिलाफ कोई बिगड़े बोल न निकलें, ऐसा कभी हो नहीं सकता उत्तरप्रदेश के चुनाव में नेताओं की इस बदजुबानी ने कुछ ज्यादा ही गर्मी ला रखी है लेकिन शायद उन्हें ये अहसास नहीं कि वोटर अब पहले से भी इतना अधिक जागरूक हो चुका है, जो उनकी अमर्यादित भाषा को तो समझता ही है लेकिन वो ये भी जानता है कि इसके जरिये समाज में किस तरह की नफरत का माहौल बनाया जा रहा है।

गौरतलब है कि जिन राजनीतिक नारों ने मायावती को बहुजन समाज का नेता बनाया अब वे उन नारों पर सफाई देती फिर रही हैं। वे कह रही हैं ये नारे बसपा ने कभी दिए ही नहीं थे, बल्कि समाजवादी पार्टी ने बसपा को बदनाम करने के लिए इन नारों का प्रचार किया था। अगर ऐसा है तो मायावती ने या मायवर कांशीराम ने उस समय इन नारों का विरोध क्यों नहीं किया था? बसपा के कार्यकातारों को इस तरह के नारे लगाने से रोका क्यों नहीं गया था? जाहिर है उस समय इन नारों से फायदा दिख रहा था इसलिए इन्हें अपनाया गया और अब जबकि मायावती ने अपने राजनीतिक सिद्धांतों को पूरी तरह से बदल दिया है तो वे इन नारों से पीछा छुड़ा रही हैं उन्होंने बुधवार को तीन ट्रिवट किए, जिसमें नब्बे के दशक में चर्चित हुए नारों का विरोध किया और कहा कि ये नारे सपा ने गढ़े थे, बसपा को बदनाम करने के लिए। जब मुलायम सिंह और कांशीराम ने सपा और बसपा के बीच तालमेल किया था और 1993 का चुनाव लड़ा था तब एक नारा चर्चित हुआ था हामिले मुलायम-कांशीराम, हवा में उड़ गए जयश्रीरामह। इसका जिक्र करते हुए मायावती ने ट्रिवट किया कि वास्तवमें यूपी के विकास व जनहित की बजाय जातिद्वेष एवं अनर्गल मुद्दों की राजनीति करना सपा का स्वभाव रहा है।

इसके बाद अगले ट्रिवट म उन्हान लेखा ह्यामार्यवार काशाराम जा न मिशनरी भावना के तहत गठबंधन बनाया था लेकिन मुलायम सिंह यादव के गठबंधन का सीएम बनने के बाबजूद उनकी नीयत पाक साफ न होकर बसपा को बदनाम करने व दलित उत्पीड़न जारी रखने की रहीहै। उनका तीसरा ट्रिवट था, ह्याइसी क्रम में अयोध्या, श्रीराम मंदिर व अपरकास्ट समाज आदि से संबंधित जिन नारों को प्रचारित किया गया था वे बीएसपी को बदनाम करने की सपा की शरारत व सेची समझी साजिश थी। अंतः सपा की ऐसी हरकतों से खासकर दलित, अन्य पिछड़ों व मुस्लिम समाज को सावधान रहने की सख्त जरूरतहै। नब्बे के दशक में उच्च जातियों को लेकर बसपा एक नारा चर्चित रहा था- तिलक, तराजू और तलवार इनको मारो जूते चार। अब मायावती कह रही है कि अपरकास्ट को लेकर नारे भी सपा ने लिखे थे। बहरहाल, मायावती ने जिस अंदाज में एक के बाद एक तीन ट्रिवट करके धर्म और ऊंची जाति वालों के लिए बनाए गए नारों से पीछा छुड़ाया है उससे लग रहा है कि वे अब पूरी तरह से भाजपा की लाइन पर राजनीति कर रही हैं। हालांकि यह कहना मुश्किल है कि वे इस लाइन पर राजनीति करके अपनी पार्टी के लिए सफलता की उम्मीद कर रही हैं या भाजपा के कहने पर ऐसा कर रही हैं।

•

हगामे की भेट चढ़ा और एक ससाद सब्र !

सभीन हमार प्रातानाथ रूपे करते, नारे लगाते, पन्ने मचाते, लड़के झङगड़े करते तो, हम सोचने पर मजबूर इन प्रतिनिधि रूपी बच्चों हरकतें तो हमारे बचपन के गुना अधिक हैं और सभी रूपी टीचर का कोई डर भी बजट सत्र 2023 में उत्पादकता लगभग 34 राज्यसभा की लगभग 24 याने दोनों में हम बच्चों पासिंग पैमाने 35 फीसदी से इसका मतलब हम बच्चों के हमारे प्रतिनिधि पूरी तरह जिनका जवाबी रिजल्ट सहित आम जनता, ज 2023 में आने वाले कु चुनाव और 2024 के 3 दी जिसके कारण 2023 हांगमे की भेंट चढ़ा ! इसी पीआईबी और मीडिया जानकारी के सहयोग से इस माध्यम से चर्चा करेंगे, ऐ जनता जनादिन के मतदान की बाती है।

का बारा ह।
साथियों बात अगर आम
2023 की करें तो, 31 जून
को शुरू हआ संसद का ब

त्र गणामा डडे, धूम एवं देखे गए गए हैं कि वे शरारतें, लल से कई अनिश्चिति/अध्यक्ष ही हैं। इस सभा की सदी और ऐसीसदी रही परीक्षा के बाहर कम हुए। पैरिजन में त हुए हैं, जो मतदाता जनादन राज्यों के चुनाव में बजट सत्र आज हम उपलब्ध एर्टिकल के बू, अब जवाब देने वजट सत्र वरी 2023 सत्र आज वानी 6 अप्रैल 2022 (गुरुवार) व अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया है। बजट सत्र के बारे में बोलते हु केंद्रीय संसदीय कार्य और संस्कृति राज मंत्री, ने कहा कि बजट सत्र 2023 कुल 25 बैठकें हुईं। राज्य सभा औ लोकसभा 13 फरवरी 2023 से 1 मार्च तक अवकाश के लिए स्थगित किया गए थे और सोमवार यानी 13 मार्च 2023 को फिर से दोनों सदन व कार्वाई शुरू हुई ताकि विभागीय स्थान समितियां विभिन्न मंत्रालयों/विभागों अनुदान से जुड़ी मार्गों की जांच और रिपोर्ट कर सकें। वर्ष का पहला सत्र होने के नाते, राष्ट्रपति ने 31 जनवरी, 2023 को संविधान के अनुच्छेद 87(1) तहत संसद के दोनों सदनों को संबोधित किया था। लोकसभा में राष्ट्रपति ने अधिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पेक्षित किया गया था और इसका भी किया गया था। इस प्रक्रिया के लिए लोकसभा व आवंटित 12 घटों के मुकाबले 13 घटों 44 मिनट लगे राज्यसभा में भी इसे पेक्षित किया। इस मद ने 12 घटे के आवंटित समय के मुकाबले 12 घटे 42 मिनट लिए राज्य सभा को व्यस्त रखा। सत्र व पहले भाग के दौरान दोनों सदनों द्वारा माननीय पीएम के उत्तर के बाद धन्यवाद प्रस्तावों पर चर्चा की गई और उन

स्वाक्षर किया गया। लोकसभा के 143 सदस्यों और राज्यसभा के 48 सदस्यों ने इस विषय पर चर्चा में भाग लिया। बताया गया कि 2023-24 का केंद्रीय बजट बुधवार, 1 फरवरी, 2023 को पेश किया गया। सत्र के पहले भाग में दोनों सदनों में केंद्रीय बजट पर आम चर्चा हुई। इसने लोकसभा को 12 घंटे के आवार्टित समय के मुकाबले 14 घंटे 45 मिनट और राज्यसभा को 12 घंटे के आवार्टित समय के मुकाबले 2 घंटे 21 मिनट का समय दिया। लोकसभा में 145 सदस्यों और राज्यसभा में 12 सदस्यों ने इस विषय पर चर्चा में भाग लिया। अलग-अलग मंत्रालयों जैसे रेलवे, ग्रामीण विकास, पंचायती राज, जनजातीय मामले, पर्यटन, संस्कृति और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण की अनुदान मांगों को लोकसभा में लगातार व्यवधान के कारण नहीं लिया जा सका। साथियों बात अगर हम पक्ष विषय के हँगामे के कारणों की करें तो, पक्ष का मुद्दा विषय के युआ नेता से विदेश में दिए गए बयानों पर माफी मांगने और विषय का मुद्दा उद्योगपति से संबंधित रिसर्च रिपोर्ट पर उनकी जेपेसी बैठाने की मांग थी जिसे दोनों पक्षों ने अलग-अलग बयान इस प्रकार हैं। प्रमुख विषयकी पार्टी के नेता ने कहा कि पूरी रूलिंग पार्टी और सरकार

का खनन करन का काम कर पूरे सत्र में वे बस उद्योगपति को ले लगे थे। उन्होंने कहा कि हम उसी जांच की मांग कर रहे हैं। वे बात तक नहीं कर रहे हैं। हम इस जनता के बीच लेकर जाएंगे। सत्र का दूसरा हिस्सा हालांकि वे उद्योगपति समूह से जुड़े मामले के लिए संयुक्त संसदीय समिति (गठित किए जाने की मांग और को लेकर लंदन में युवा नेता गई एक टिप्पणी पर सत्ता पक्ष अध्यक्ष से माफी मांगने पर जोर कारण हुए हंगामे की भेंट चढ़ मुख विपक्षी पार्टी अध्यक्ष ने कहा नार ने इस बजट को चर्चा में नहीं पूरा प्रयास किया। सरकार की बहुत बातें कहती है लेकिन वे ही है उसके तहत चलती नहीं हैं। ब करोड़ का बजट केवल 12 पास किया गया है। वे हमेशा कहते हैं कि विषय को दिलचस्पी नहीं है विषय तो सरकार की तरफ से आगे कहा कि सरकार ने इस तो चर्चा में नहीं लाने का पूरा याया। सरकार लोकतंत्र की बहुत जरूरी है लेकिन जो कहती है उसके लाली नहीं हैं, आगे कहा कि में लोकतांत्रिक तरीके से लड़ा

कर अगर नहीं मानता है। सरकार को हमेशा विद्याहिए, प्रतिक्रिया देनी चाहिए। लोकतंत्र को जिंदा रखने विपक्ष की भी बात है। कहा कि युवा नेता घोषित कर दिया गया की मांग कर रहे हैं। वे विपक्ष को कमजोर नहीं रहे हैं। जबकि पक्ष नहीं चलने देने का हम, 17 वीं लोक सभा और राज्यसभा के बान विधायी कामकाज (3) को लोक सभा में लेकर, लोक सभा द्वारा राज्य सभा द्वारा गए विधेयकों, दोनों तात्/वापस किए गए की करें तो, क लोक ए विधेयक (1)वित्त (2)अंतर-सेवा, नियंत्रण और विधेयक, 2023 (3)जम्मू-योग विधेयक, 2023 कश्मीर विनियोग विधेयक, 2023 (5) बिल, 2023 (6)विनयाग विधेयक, 2023 (संरक्षण) संशोधन विधेयक, 2023 (8) कोस्टल एकवाकल्चर अर्थार्टी (संशोधन) बिल, 2023 वक्त लोक सभा द्वारा पारित विधेयक (1)वित्त विधेयक, 2023 (2) जम्मू और कश्मीर विनियोग विधेयक, 2023 (3) जम्मू और कश्मीर विनियोग (संख्या 2) विधेयक, 2023(4)विनियोग (नंबर 2) बिल, 2023 (5) विनियोग विधेयक,2023 (6) प्रतियोगिता (संशोधन) विधेयक, 2023 वक्त - राज्य सभा द्वारा पारित/लौटाए गए विधेयक (1) वित्त विधेयक 2023(2)जम्मू और कश्मीर विनियोग विधेयक, 2023 (3) जम्मू और कश्मीर विनियोग (संख्या 2) विधेयक, 2023 (4) विनियोग (नंबर 2) बिल, 2023 (5) विनियोग विधेयक, 2023 (6) प्रतियोगिता (संशोधन) विधेयक, 2023 वक्त - संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित/लौटाए गए विधेयक (1) वित्त विधेयक, 2023(2)जम्मू और कश्मीर विनियोग विधेयक, 2023(3)जम्मू और कश्मीर विनियोग (संख्या 2) विधेयक, 2023(4)विनियोग (नंबर 2) बिल, 2023(5)विनियोग विधेयक, 2023(6)प्रतियोगिता (संशोधन) विधेयक, 2023।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम का शंखनाद करने वाले क्रांतिकारी- मंगल पाण्डेय

मंगल पाण्डेय सन 1849 में 22 ल की उम्र में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में बंगाल नेटिव रन्ट्री की 34वीं बटालियन में ल सेना के 1446 नम्बर के पाही के रूप में शामिल हो लिकिन अकबरपुर ब्रिगेड में ली नियुक्ति के कुछ ही वर्ष बाद वेजी सेना से उनका मोह भंग हो न भर गया, और समय के साथ ले हालात ने मंगल पाण्डेय को टेंशन हुकूमत का दुश्मन बना गा। फिर चर्ची लगे कारतूस और फल के विवाद ने आग में धी उनने का काम करते हुए उनके ए क्रांति के शंखनाद का सबब गया इसके बाद मंगल पाण्डेय 857 में भारत के प्रथम अधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण में का निभाई। और एनफील्ड फल में प्रयोग की जाने वाली गाय

की चर्ची मिले कारतूस को मुँह से काटने से मना करते हुए क्रांति का बिगुल फूंक दिया जिसके कारण तत्कालीन अंग्रेजी शासन ने उन्हें बांग करार दिया, और उन्हें गिरफ्तार कर 8 अप्रैल 1857 को फांसी दे दी। जबकि भारतीय जन उन्हें स्वाधीनता संग्राम के एक महान नायक के रूप में सम्मान देता है। भारत के स्वाधीनता संग्राम में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को लेकर भारत सरकार द्वारा उनके सम्मान में सन 1984 में एक डाक टिकट जारी किया गया।

1857 के स्वाधीनता संग्राम में विद्रोह का प्रारम्भ 1850 के दशक के उत्तरार्ध में सिपाहियों के उपयोग के लिए लाई गई नई पैटन 1853 एनफाइल राइफल अथवा बंदूक के कारण हुआ। 0.577 कैलिवर की यह बंदूक पुरानी और कई दशकों से

जायी जा रही ब्राउन बैस
में में शक्तिशाली और
नई बंदूक में गोली दागने
ए प्रणाली प्रिक्षण कैप
किया गया था, परन्तु
गोली भरने की प्रक्रिया
नहीं। नई एनफील्ड बंदूक
ए कारतूस को दातों से
बोलना पड़ता था, और
ए बारूद को बंदूक की
कर कारतूस को डालना
कारतूस का बाहरी
वर्णी होती थी। सिपाहियों
अफवाह फैल चुकी थी
में लगी हुई चर्ची सूअर
मास से बनायी जाती
ने इसे ब्रिटिश सरकार
मझी साजिश के तहत
लम्हानों के धर्म से
मझा इन कारतूसों को
लकर राइफल में लोड
करना हिंदुओं के स
मुस्लिमों को भी गवारा
कारतूस में चर्ची के प्रयोग
उग्र थे। सैनिकों में इस
धीरे-धीरे बगावत होने
अंतमःमंगल पाण्डेय ने क
इस्तेमाल करने से इकार
29 मार्च 1857 को अंग्रेज
का खुला विरोध कर
अपने सभी साथी सिपाही
इसके खिलाफ आवाज
लिए प्रेरित किया। मंगल
फिरंगी मारोका नारा १
और कलकत्ता के निकट
परेड मैदान में २९ मार्च १८५७
रेजीमेंट के अफसर लेफ्टिनेंट
द्वारा कारतूस के इस्तेमाल
दबाव बनाने हेतु जोर
किए जाने पर मंगल पाण्डेय
पर हमला कर बाग सहित
अफसरों को घायल ब

स-साथ थीं था। सिपाही लेकर लगी। युस का रंते हुए सरकार था। और यों को गने के बड़े ने दिया। अरकपुर 57 को ट बाग क लिए बर्दस्ती ने उन ब्रिटिश दिया। ब्रिटिश सरकार के खिलाफ किसी भी सैनिक का यह पहला विरोध था। इसके बाद तो मंगल पाण्डेय पर धार्मिक उन्माद का आरोप लगा और जनरल जान ने जमादार ईश्वरी प्रसाद को मंगल पाण्डेय को गिरफ्तार करने का आदेश दिया परन्तु जमादार ने गिरफ्तार करने से मना कर दिया। सिवाय एक सिपाही शेख पलटु को छोड़ कर सारी रेजीमेंट ने मंगल पाण्डेय को गिरफ्तार करने से मना कर दिया। मंगल पाण्डेय ने अपने साथियों को खुलैआम विद्रोह करने के लिए कहा, परन्तु किसी के न मानने पर उन्होंने अपनी बंदूक से ही स्वयं अपनी प्राण लेने का प्रयास किया। परन्तु वे इस प्रयास में सिर्फ घायल हुये। 6 अप्रैल 1857 को मंगल पाण्डेय का कोर्ट मार्शल कर दिया गया।

ध्वनि भानुशाली म्यूजिक 'वास्ते' को लेकर इन दिनों चर्चा में हैं। ध्वनि भानुशाली निखिल डिम्जुआ के स्वर से इस म्यूजिक वीडियो के अराफत महमद और कार तनिक बागची हैं। टी-ट्रायल रिलीज यह म्यूजिक राधिका राव और विनय सप्तर्ण द्वारा रिएशन है। वैसे 'वास्ते' के ध्वनि भानुशाली ने कई हिट गाने दिए हैं, जिसमें 'बाटला हाउस से'), '(लुका छुपी से), 'साइको (साहो से) के साथ-साथ 'यार', 'डायनामाइट', 'कुड़ी 'मेहदी' उल्लेखनीय हैं। विश्व स्तर पर टॉप 10 ज्यादा पसंद किए जाने वाले वीडियो की लिस्ट में भी इसका हुआ है और इसके पूर्व 2019 में छा जाने वाली इकलौती इंडियन म्यूजिक आर्टिस्ट थीं। आज, इस गाने के सोशल मीडिया पर आधे मिलियन से भी ज्यादा गील मौजूद हैं। इस मोस्ट पापुलर गाने को एक और बड़ी उपलब्धि हासिल हुई है। 'इशरे तेरे' और 'लेजा रे' जैसे गानों के लिए पहचानी जाने वाली सिंगर ध्वनि भानुशाली के गाने 'वास्ते' को यूट्यूब पर 1.5 बिलियन व्यूज मिल चुके हैं। 1 अरब व्यूज पाने वालों में भारतीय गीतों में भक्ति गीत 'हनुमान चालीसा' लिस्ट में सबसे ऊपर है, इसके बाद पंजाबी सॉन्ग 'लहांग' और एक हरियाणवी सॉन्ग '52 गज का दाम' है। ध्वनि भानुशाली का गाना चौथे नंबर पर है। 'वास्ते' की सफलता के बाद ध्वनि भानुशाली सबसे कम उम्र की भारतीय म्यूजिक आर्टिस्ट बन गई हैं।

